कथा सरिता

छोटा सा बदलाव

एक लड़का सुबह-सुबह दौड़ने को जाया करता था। आते-जाते वो एक बूढ़ी महिला को देखता था। वो बूढ़ी महिला तालाब के किनारे छोटे-छोटे कछुओं की पीठ को साफ किया करती थी। एक दिन उसने इसके पीछे का कारण जानने की सोची।

वो लड़का महिला के पास गया और उनका अभिवादन कर बोला ''आंटी नमस्ते! मैं आपको हमेशा इन कछुओं की पीठ को साफ करते हुए देखता हूँ। आप ऐसा किस वजह से करते हो?'' महिला ने उस मासूम से लड़के को देखा और इस पर लड़के को जवाब दिया, ''मैं हर रविवार यहाँ आती हूँ और इन छोटे-छोटे कछुओं की पीठ साफ करते हुए सुख-शांति का अनुभव लेती हूँ। कछुओं की पीठ पर जो कवच होता है उसपर कचरा जमा हो जाने की वजह से इनकी गर्मी पैदा करने की क्षमता कम हो जाती है, इसलिए इन कछुओं को तैरने में मुश्किल होती है। कुछ समय बाद तक अगर ऐसा ही रहे तो ये कवच भी कमज़ोर हो जाते हैं, इसलिए कवच को साफ करती हूँ।

यह सुनकर लड़का बड़ा हैरान हुआ। उसने फिर एक जाना पहचाना सा सवाल किया और बोला ''बेशक आप बहुत अच्छा काम कर रहे हैं, लेकिन फिर भी आंटी एक बात सोचिए कि इन जैसे कितने कछुए हैं जो इनसे भी बुरी हालत में हैं, जबकि आप सभी के लिए ये नहीं कर सकते, तो उनका क्या, क्योंकि आपके अकेले के बदलने से तो कोई बड़ा बदलाव नहीं आयेगा न!''

महिला ने बड़ा ही संक्षिप्त लेकिन असरदार जवाब दिया कि भले ही मेरे इस कर्म से दुनिया में कोई बड़ा बदलाव नहीं आयेगा, लेकिन सोचो! इस एक कछुए की ज़िन्दगी में तो बदलाव आयेगा ही न। तो क्यों न हम छोटे बदलाव से ही शुरुआत करें।

एक रुपया...

एक महात्मा भ्रमण करते हुए किसी नगर से होकर जा रहे थे। मार्ग में उन्हें एक रुपया (एक रुपये का सिक्का) मिला। महात्मा तो वैरागी और संतोष से भरे व्यक्ति थे। भला एक रुपये का क्या करते, इसलिए उन्होंने वह रुपया किसी दरिद्र को देने का विचार किया। कई दिन की तलाश के बाद भी उन्हें कोई दरिद्र नहीं मिला।

एक दिन वे अपने दैनिक क्रियाकर्म के लिए सुबह-सुबह उठते हैं तो क्या देखते हैं कि एक राजा अपनी सेना को लेकर दूसरे राज्य पर आक्रमण के लिए उनके आश्रम के सामने से जा रहा है। ऋषि बाहर आये तो उन्हें देखकर राजा ने अपनी सेना को रुकने का आदेश दिया और खुद आशीर्वाद के लिए ऋषि के पास आकर बोले महात्मन! मैं दूसरे राज्य को जीतने के लिए जा रहा हूँ ताकि मेरा राज्य विस्तार हो सके। इसलिए मुझे विजयी होने का आशीर्वाद प्रदान करें।

इस पर ऋषि ने काफी देर सोचा और सोचने के बाद वो एक रुपया राजा की हथेली में रख दिया। यह देखकर राजा हैरान और नाराज़ दोनों हुए, लेकिन उन्हें इसके पीछे का प्रायोजन काफी देर तक सोचने के बाद भी समझ नहीं आया। राजा ने महात्मा से इसका कारण पूछा तो महात्मा ने राजा को सहज भाव से जवाब दिया कि राजन! कई दिनों पहले मुझे ये एक रुपया आश्रम आते समय मार्ग में मिला था, तो मुझे लगा कि किसी दरिद्र को इसे दे देना चाहिए, क्योंकि किसी वैरागी के पास इसके होने का कोई औचित्य नहीं है। बहुत खोजने के बाद भी मुझे कोई दरिद्र व्यक्ति नहीं मिला, लेकिन आज तुम्हें देखकर ये ख्याल आया कि तुमसे दरिद्र तो कोई है ही नहीं इस राज्य में, जो सब कुछ होने के बाद भी किसी दूसरे बड़े राज्य के लिए भी लालसा रखता है। वही एक कारण है कि मैंने तुम्हें ये एक रुपया दिया है।

!! मैले कपड़े !!

जापान में एक शहर है ओसाका। वहाँ शहर के निकट ही एक गाँव में एक विद्वान संत रहा करते थे। एक दिन संत अपने एक अनुयायी के साथ सुबह की सैर कर रहे थे। अचानक ही एक व्यक्ति उनके निकट आया और उन्हें बुरा भला कहने लगा। उसने संत के लिए बहुत सारे अपशब्द कहे, लेकिन संत फिर भी मुस्कराते हुए चलते रहे। उस व्यक्ति ने देखा कि संत पर कोई असर नहीं हुआ तो वह व्यक्ति और भी क्रोधित हो गया और उनके पूर्वजों तक तो गालियाँ देने लगा।

संत फिर भी मुस्कराते हुए आगे बढ़ते रहे। उनपर कोई असर नहीं होते देख वो व्यक्ति निराश हो गया और उनके रास्ते से हट गया। उस व्यक्ति के जाते ही संत के अनुयायी ने उस संत से पूछा कि आपने उस दुष्ट की बातों का कोई जवाब क्यों नहीं दिया, वो बोलता रहा और आप मुस्कराते रहे, क्या आपको उसकी बातों से ज़रा भी कष्ट नहीं पहुँचा?

संत कुछ नहीं बोले और अपने अनुयायी को अपने पीछे आने का इशारा किया। कुछ देर चलने के बाद वो दोनों संत के कक्ष तक पहुँच गये। उससे संत बोले, तुम यहीं रुको, मैं अंदर से अभी आया। कुछ देर बाद संत अपने कमरे से निकले तो उनके हाथों में कुछ मैले कपड़े थे। उन्होंने बाहर आकर उस अनुयायी से कहा, 'ये लो तुम अपने कपड़े उतारकर ये कपड़े धारण कर लो। तो शिष्य ने देखा कि उन कपड़ों से बड़ी अजीब सी दुर्गन्ध आ रही थी। तो उसने हाथ में लेते ही उन कपड़ों को दूर फेंक दिया।

संत बोले, अब समझे, जब कोई तुमसे बिना मतलब के बुरा भला कहता है तो तुम क्रोधित होकर उसके फेंके हुए अपशब्द धारण करते हो अपनी मधुर वाणी की जगह। इसलिए जिस तरह तुम अपने साफ सुथरे कपड़ों की जगह ये मैले कपड़े धारण नहीं कर सकते, उसी तरह मैं उस आदमी के फेंके हुए अपशब्दों को कैसे धारण करता। यही वजह थी कि मुझे उसकी बातों से कोई फर्क नहीं पड़ा।

इनकी नज़रों से दादी जी...

दादी के दरवाज़े सदा खुले थे

प्रकाशमणि दादी हमारी पालना के निमित्त बनीं। जब बाबा अव्यक्त हुए, उसी समय मैं सेंटर पर रहने आयी। तो मेरे जीवन में आध्यात्मिक मोड़ लाने वाली, चाहत भरने वाली, बल-शक्ति देने वाली, न्यारा-प्यारा बनाने वाली हमारी प्रकाशमणि दादी ही थीं। उनसे ही हमने सबकुछ सीखा, उन्होंने ही हमारी पालना की।

एक बार भोपाल में भवन का उद्घाटन था। दादी वहाँ आई थीं और मैं भी उनसे मिलने गई हुई थी। अगले दिन सुबह-सुबह हम दादी से मिले बिना ही रायपुर आ गये। उसके बाद जब हमारा मधुबन जाना हुआ तो दादी ने हमसे कहा कि मुझसे मिले बिना ही क्यों चले गए। मैंने संकोच वश अपनी मंसा बताई कि मैं आपकी दिनचर्या को देखते थोड़ा सोचने लगी थी इसलिए आपके कमरे में नहीं आई। तो दादी ने कहा कि नहीं, ऐसा नहीं सोचना, आपको दादी से छुट्टी लेकर ही जाना चाहिए। उसके बाद जब भी हमारा मधुबन जाना होता था तो हम बिना दादी से छुट्टी लिए नहीं आते थे। कभी हमें दादी से संकोच नहीं रहा। मैं अपने से बहुत ही संतुष्ट हूँ कि हमने दादी से भरपूर झोली भरी है। - ब्र.कु. कमला,इंदौर क्षेत्र की निदेशिका,रायपुर

दादी के चेहरे में बाबा का चेहरा दिखाई दिया

एक बार दीदी मनमोहिनी ने ऑलराउंडर दादी के साथ मुझे पाण्डव भवन दिल्ली में सेवार्थ जाने को कहा। तब ऑलराउंडर दादी और मैं बड़ी दादी से मिले और सुनाया कि हम पाण्डव भवन दिल्ली सेवा में जा रहे हैं। तब दादी जी ने बड़े प्यार से छुट्टी दी और बहुत देर दृष्टि देने के पश्चात् कहा कि यह समझदार है, बहुत गम्भीर है, लायक है। उस समय मुझे दादी का चेहरा नहीं दिखाई दे रहा था, साकार बाबा का ही चेहरा दिखाई दे रहा था। मेरे मुख से भी निकला `जी बाबा'। बाल्यकाल में साकार बाबा ने हमारा हाथ पकड़कर बड़े प्यार से दृष्टि दी थी, ऐसा एहसास मुझे बाद में भी कई बार दादी के द्वारा हुआ। दादी जी के ये शब्द कि ये लायक है, मुझे वरदान जैसे लग रहे थे। सचमुच तब से मुझ आत्मा में एक हिम्मत और बल भर गया। एक बार मधुबन में टीचर्स बहनों की भट्ठी में दादी जी पाण्डव भवन के मेडिटेशन हॉल में सब बहनों को रास करा रही थीं। दादी जी जब हमारी सर्कल में आईं तो उन्होंने मुझे गले लगा लिया। वो लवलीन स्थिति और सुखद अनुभूति आज भी मेरे मन-मस्तिष्क में ज़िन्दा है।

– ब्र.कु. पुष्पा,संचालिका,पाण्डव भवन,दिल्ली

दादी की परख शक्ति अचूक

मेरी माँ से दादी ने पूछा कि आप बताओ आपकी कितनी बेटियाँ हैं, तो माता जी ने बताया कि मेरी चार बेटियाँ हैं तो दादी ने कहा कि अब आपकी चारो ही बेटियाँ बाबा के घर में रहेंगी। उनका कहना और हमारा ईश्वरीय सेवार्थ समर्पित हो जाना। इसके अलावा मेरा एक अनुभव और भी है कि-एक बार की बात है मैं मधुबन में थी तो मैंने दादी को देखा तो मेरे मन में आया कि दादी के साथ एक फोटो निकालें। इसलिए मैं दादी को देखे जा रही थी और दादी भी मुझे देख रही थी, फिर उन्होंने देखते-देखते कहा कि आओ आओ। वे समझ गई थीं कि मैं उनके साथ फोटो खिचवाना चाहती हूँ, फिर हमने साथ में फोटो निकलवाया, जिसे आज भी मैंने अपने पास संभाल कर रखा है। तो मैंने यह अनुभव किया कि दादी कैसे हमारे मन के भावों को बिना कहे ही समझ जाती थीं। दादी की जो पालना मिली और उनका प्यार और स्नेह मिला वो अविस्मरणीय है। आज भी मधुबन जाओ तो जैसे चारो ओर उनकी छवि सामने आ जाती है। – ब्र.कु. अविता,सेवाकेन्द्र संचालिका,नरकटियागंज विहार